शोध मंथन Vol. XV No.III July.-Sept. 2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

भारतीय गाँवों में सामाजिक संरचना के बदलते स्वरुप का अवलोकन

प्राप्तिः 21.07.2024
स्वीकृतः 15.09.2024

62

अनुपमा यादव,
शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
ईमेलः *anupama300788@gmail.com*

प्रो. डॉ. सत्या मिश्रा,
समाजशास्त्र विभाग,
नारी शिक्षा निकेतन गर्ल्स पी.जी. कालेज,
लखनऊ

सारांश

भारतीय गाँवों की सामाजिक संरचना में सामाजिक–आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों के कारण महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे हैं। जाति, धर्म और लैंगिक भूमिकाओं जैसे कारकों पर आधारित पारंपरिक पदानुक्रमित संरचना, शिक्षा एवं आर्थिक अवसरों तक बढ़ती पहुंच के कारण धीरे–धीरे विकसित हो रही है। इससे सामाजिक विषमताएं दूर होने लगी और सामाजिक पदानुक्रम अधिक सुगम हो गया है। आर्थिक परिवर्तन, जैसे कि कृषि से औद्योगिक अर्थव्यवस्थाओं व बाजार में बदलाव, ने सामाजिक संबंधों को नयी दिशा की ओर सृजित कर दिया है। पारंपरिक व्यवसायों के स्थान आधुनिक उद्योगों और सेवा क्षेत्रों ने ले लिया है। संचार व प्रौद्योगिकी में प्रगति ने भी अधिक सुगमता की सुविधा प्रदान की है, जिससे ग्रामीण समुदायों के भीतर जीवन शैली, मूल्यों व सांस्कृतिक प्रथाओं में बदलाव आया है। इसके परिणामस्वरूप अधिक बहुलवादी और विषम सामाजिक परिवेश तैयार हुआ है, जिसमें नए सामाजिक मानदंड व पहचान उभर कर सामने आये हैं। स्थानीय संस्थाएँ, जैसे ग्राम परिषदें, समुदाय–आधारित संगठन, सामाजिक संबंधों में मध्यस्थता करने और सामुदायिक आवश्यकताओं को संबोधित करने में काफी महत्वपूर्ण हो गए हैं। ये परिवर्तन सामाजिक समावेशन व सशक्तिकरण के लिए नए अवसर प्रस्तुत करते हैं। सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने, असमानताओं को दूर करने और सामाजिक एकजुटता को बढ़ावा देने में चुनौतियां भी प्रस्तुत करते हैं।

मुख्य शब्द

भारतीय गाँव, सामाजिक संरचना, आधुनिकता, परिवर्तन, परम्परा, बदलते प्रतिमान, सामाजिक व्यवस्था

प्रस्तावना

स्वतंत्रता से पूर्व और स्वतंत्रता के पश्चात की कालावधियों में सामाजिक संरचना में पाए जाने वाले कुछ मुख्य बदलावों जिसमें भारतीय गाँवों की सामाजिक संरचना में जाति व्यवस्था का अत्यधिक महत्व था। लोगों की सामाजिक व आर्थिक स्थिति इस व्यवस्था के अनुसार निर्धारित होती थी, और जाति अनुसार व्यवसायों का विभाजन भी होता था। परंपरागत उत्पादन और जीवनशैली, संगठन, और संबंध ग्रामीण समाज के महत्वपूर्ण हिस्से थे। स्वतंत्रता से पूर्व, भारतीय गाँवों में परंपरागत प्रथाओं का महत्व था। जैसे जैसे समय बीतता गया वैश्वीकृत समाज की संरचना के नये स्वरुप का उदय हुआ और भारतीय गाँवों में सामाजिक बदलाव देखा गया। जातिवाद, असमानता, और आर्थिक विभाजन पर ध्यान दिया गया। स्वतंत्रता के पश्चात, सामाजिक समरसता, सामाजिक न्याय, और समानता के प्रति लोगों की भावना बढ़ी। विभिन्न समाज और समुदायों के बीच आर्थिक और सामाजिक सहयोग का विकास हुआ और शिक्षा के क्षेत्र में विषेश ध्यान दिया गया। गाँवों में शिक्षा को प्राथमिकता के रूप में महत्व प्रदान किया गया। ग्रामीण क्षेत्रों में सुविधाओं में वृद्धि जैस– शिक्षा, स्वास्थ्य, पानी की आपूर्ति, सड़क निर्माण और अन्य आवासीय सुविधाओं का विकास किया गया। भारतीय गाँवों की सामाजिक संरचना में कई महत्वपूर्ण बदलाव देखे गए, जो समाज के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करते रहे हैं। गांवों की सामाजिक संरचना विभिन्न सामाजिक–आर्थिक, तकनीकी एवं सांस्कृतिक प्रारुपों की प्रतिक्रिया में महत्वपूर्ण बदलावों से गुजर रही है। ये परिवर्तन ग्रामीण समुदायों के स्वरुप को नये आकार दे रहे हैं और उनमें शामिल व्यक्तियों एवं समूहों के लिए दूरगामी साबित हो रहे हैं। **[यादव, अखिलेश चन्द्र 2010]**, कृषि से औद्योगिक अर्थव्यवस्थाओं में बदलाव सहित आर्थिक परिवर्तनों ने पारंपरिक आजीविका जैसे माध्यमों को भी बाधित किया है और ग्रामीण समुदायों के भीतर शक्ति की गतिशीलता को परिवर्तित कर दिया है। इसके अलावा, बेहतर परिवहन व संचार माध्यम से शहरी केंद्रों और व्यापक दुनिया के साथ ग्रामीण क्षेत्रों के बढ़ते अंतर्संबंध ने विचारों, मूल्यों व सांस्कृतिक प्रथाओं के आदान–प्रदान को सुविधाजनक बनाया है। इस सांस्कृतिक प्रसार ने मिश्रित पहचान के उद्भव और ग्रामीण व शहरी जीवन शैली के मध्य पारंपरिक सीमाओं को विघटित करने में योगदान दिया है। परिवर्तन की इस पृष्ठभूमि में, स्थानीय शासन, संस्थान और समुदाय–आधारित संगठन सामाजिक संबंधों में मध्यस्थता करने व सामुदायिक जरूरतों को संबोधित करने में अधिक महत्वपूर्ण मान रहे हैं। ये जमीनी स्तर के संस्थान सामाजिक एकता को बढ़ावा देने, संघर्षों को सुलझाने और ग्रामीण क्षेत्रों में समावेशी विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन गतिशीलता के प्रकाश में, भारतीय गांवों में सामाजिक संरचना की बदलती प्रकृति व सामाजिक एकजुटता, आर्थिक विकास और राजनीतिक भागीदारी के लिए इसके निहितार्थ की आलोचनात्मक समीक्षा करना आवश्यक है।

शोध पद्धति

एक समीक्षा लेख में, मुख्यतः पहले से प्रकाशित साहित्य और अनुसंधान का विश्लेषण और समाकलन किया जाता है। इसलिए, समीक्षा लेख के लिए विशेष रूप साहित्यिक शोध पत्रों की समीक्षा के साथ प्रासंगिक पुस्तकों, और अन्य स्रोतों का अध्ययन करते हुए शोध की पृश्ठभूमि और

रुपरेखा को तैयार किया गया है। इसके साथ ही मौजूदा अनुसंधान में अनुसंधान अंतराल और नई जानकारी की आवश्यकता की पहचान करना भी है। वर्णनात्मक कार्यप्रणाली अनुसंधानकर्ताओं को किसी घटना या स्थिति का व्यापक और विस्तृत चित्रण प्रदान करने में सक्षम बनाती है, जिससे वे मौजूदा परिस्थिति को अच्छी तरह से समझ सकते हैं और भविष्य के अनुसंधान के लिए आधार तैयार कर सकते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

- भारतीय गाँवों की सामाजिक संरचना का अध्ययन करना।
- गाँवों में सामाजिक संरचना के बदलते स्वरुप का अध्ययन करना।

साहित्य अवलोकन

भारतीय गाँवों और उनकी सामाजिक व्यवस्था के बारे में अध्ययन संबंधित साहित्य काफी विविध है। यहाँ महत्वपूर्ण विशयों पर आधारित प्रमुख अध्ययन सम्बन्धित साहित्य अवलोकन इस प्रकार है:

एस.सी. दुबे (1955) भारतीय सामाजिक जीवन में गांवों के महत्व पर जोर देते हैं, जहां पारंपरिक और आधुनिक संस्कृतियां मिलती हैं। **ए.आर.देसाई (1969)** ग्रामीण विकास को समझने और समस्याओं के समाधान के लिए ग्रामीण संगठन की संरचना, कार्य और विकास के व्यवस्थित अध ययन का सुझाव देते हैं। ग्रामीण जीवन पर औद्योगीकरण और शहरीकरण का बढ़ता प्रभाव अच्छी तरह से प्रलेखित है, और लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण के लिए ग्राम समुदायों का वैज्ञानिक अध्ययन महत्वपूर्ण है।**श्रीनिवास, एम.एन. (1987),** प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत भारतीय गाँव के स्वरुप एवं वास्तविकता की समीक्षा की गयी है। राष्ट्रीय या क्षेत्रीय स्तर पर राज्यों से सरकारों के अधिकार में बदलाव की परवाह किए बिना, गाँव को भारत में सामाजिक संगठन की मौलिक इकाई, एक स्वतंत्र इकाई के रूप में जाना जाता था।**डॉ. मुमताज बानो(2004),** गाँव का अध्ययन समाजशास्त्र और सामाजिक मानवविज्ञान में महत्वपूर्ण है, खासकर भारत में, जहाँ आबादी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा ग्रामीण क्षेत्रों में रहता है। शुरुआत में 1930 के दशक में लोकप्रिय हुए, 1960 के दशक तक इनमें तेजी का अनुभव हुआ। हालाँकि, गाँवों पर ध्यान केंद्रित करने वाले समाजशास्त्रीय अध्ययनों में गिरावट आई है। इसके बावजूद, कॉर्नेल विश्वविद्यालय और अन्य अमेरिकी विश्वविद्यालयों के शोधकर्ताओं ने भारत में ग्रामीण अध्ययन में रुचि दिखाई है, विशेष रूप से पश्चिमी उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले के रणखंडी और झबीरन, नागल और जखवाला गांवों में। ये अध्ययन सामाजिक संरचना, व्यवस्था, जाति संबंध, सामाजिक नेटवर्क, संचार और महिलाओं की स्थिति सहित विभिन्न विषयों पर केंद्रित हैं।**देसाई, ए.आर. (2014)** प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत ग्रामीण परिवेश की आवश्यकता भारतीय आध ाार के रुप में समावेशित है। गाँव की अर्थव्यवस्था गैर–कृषि क्षेत्र और सेवाओं की ओर बढ़ रही है, जिससे व्यावसायिक बदलाव और अधिशेष प्रयोज्य आय में वृद्धि हो रही है। इसके परिणामस्वरूप घरेलू संपत्तियों का निर्माण हुआ और श्रम कम करने वाले उपकरणों का उपयोग हुआ, साथ ही प्रवासन और गतिशीलता ग्रामीण जीवन का एक अहम हिस्सा बन गई है।**डॉ.नीलम सौन (2022),** प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत गाँव भारत का सामाजिक आधार हैं, और हालाँकि शहरी क्षेत्रों में आबादी

बढ़ी है, ग्रामीण जीवन इसके अस्तित्व और पहचान के लिए महत्वपूर्ण बना हुआ है। गांधीजी ने एक बार कहा था, भारत गांवों में रहता है। अगर गांव नष्ट हो जाएंगे, तो भारत भी नष्ट हो जाएगा। वास्तविक भारत गाँवों से बना है, जहाँ की 78% जनसंख्या ग्रामवासी है। भारत में सामाजिक वैज्ञानिकों के लिए, गाँव औपनिवेशिक काल से ही समीक्षा का विषय रहा है। जैसा कि धर्मशास्त्रों में देखा गया है, भारतीय गाँव पुरातात्त्विक सन्दर्भों में गहराई से निहित हैं। यह अध्ययन द्वितीयक स्रोत से एकत्र किए गए डेटा के साथ, सरकारी रिकॉर्ड और पिछले अध्ययनों का उपयोग करते हुए भारतीय गांवों में संरचनात्मक परिवर्तनों पर केंद्रित है।

भारतीय गांवों की सामाजिक संरचना भारतीय गांवों की सामाजिक संरचना, परंपराओं व पदानुक्रमों का एक जटिल समावेश है जो सदियों से विकसित हुई है। यह संरचना जाति, धर्म, आपसी सम्बन्धों व आर्थिक स्थिति जैसे कारकों से प्रभावित होती है और यह ग्रामीण निवासियों के जीवन को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।**[चौधरी, सी0एम0. 2005],** भारतीय गांवों में सामाजिक संरचना के कुछ प्रमुख पहलू इस प्रकार हैं:

● जाति व्यवस्था ग्रामीण क्षेत्रों सहित भारतीय समाज की सबसे परिभाषित विषेशताओं में से एक है। परंपरागत रूप से, समाज को पदानुक्रमित जाति समूहों में विभाजित किया गया था, प्रत्येक समूह की विशिष्ट भूमिकाएँ और व्यवसाय थे। हालाँकि जाति–आधारित भेदभाव आधिकारिक तौर पर प्रतिबंधित है, फिर भी यह ग्रामीण भारत के कई हिस्सों में अभी भी जारी है, जिससे सामाजिक संपर्क, आर्थिक अवसर और संसाधनों तक पहुंच प्रभावित हो रही है।

● भारतीय गांवों में परिवार व नातेदारी संबंधों का अत्यधिक महत्व है। विस्तारित परिवार अक्सर संसाधनों व जिम्मेदारियों को साझा करते हुए संयुक्त परिवार में एक साथ रहते हैं। आपसी सम्बन्ध सामाजिक समर्थन, निर्णय लेने और सांस्कृतिक प्रथाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। परिवार की अवधारणा रक्त संबंधों से आगे बढ़कर विवाह और सामुदायिक बंधनों के माध्यम से बने संबंधों को भी शामिल करती है।

● भारत में गाँव आपस में जुड़े हुए समुदाय हैं जहाँ लोग जीवन के विभिन्न पहलुओं के लिए एक–दूसरे पर निर्भर रहते हैं। सामाजिक स्वरुप का साझा पहचान, रुचियों और भौगोलिक निकटता के आधार पर बनते हैं। सामुदायिक सभाएँ, त्यौहार और धार्मिक समारोह गाँव के भीतर सामाजिक मेलजोल और संबंधों को मजबूत करने के महत्वपूर्ण अवसरों के रूप में काम करते हैं।

● परंपरागत रूप से, भारतीय गांवों में व्यवसाय बड़े पैमाने पर जाति–आधारित श्रम विभाजन द्वारा निर्धारित होते थे। हालाँकि, आर्थिक परिवर्तनों और गैर–कृषि क्षेत्रों में बढ़ते अवसरों के साथ, व्यावसायिक संरचना अधिक विविध होती जा रही है। जबकि कृषि प्राथमिक व्यवसाय बनी हुई है, बेहतर रोजगार की संभावनाओं की तलाश में शहरी क्षेत्रों में प्रवास की प्रवृत्ति बढ़ रही है।

● लैंगिक स्थिति एवं भूमिकाएं ग्रामीण भारतीय समाज में गहराई से व्याप्त हैं। शिक्षा, रोजगार और निर्णय लेने की शक्ति तक सीमित पहुंच के साथ महिलाएं अक्सर परिवार व समुदाय दोनों में अधीनस्थ पदों पर आसीन होती हैं। हालाँकि, शिक्षा, जागरूकता अभियान और कानूनी सुध ाारों के माध्यम से लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के प्रयासों में धीरे–धीरे बदलाव आ रहे हैं।

● भारतीय गाँवों में सामाजिक जीवन को आकार देने में धर्म और संस्कृति महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। धार्मिक संस्थान, मंदिर, मस्जिद व सामुदायिक केंद्र सामाजिक समारोहों और सांस्कृतिक गतिविधियों के केंद्र बिंदु के रूप में कार्य करते हैं।

● भारतीय गांवों में स्थानीय शासन आम तौर पर ग्राम पंचायतों (ग्राम परिषदों) जैसे निर्वाचित निकायों के माध्यम से आयोजित किया जाता है। ये संस्थान निर्णय लेने, संसाधन आवंटन और स्थानीय मुद्दों को संबोधित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हालाँकि, राजनीतिक गतिशीलता अक्सर सामाजिक पदानुक्रमों और सत्ता संरचनाओं के साथ टकराती है, जिससे समान प्रतिनिधित्व और भागीदारी सुनिश्चित करने में चुनौतियाँ उत्पन्न होती हैं।

कुल मिलाकर, भारतीय गांवों की सामाजिक संरचना, परंपरा, आधुनिकता, निरंतरता और परिवर्तन के जटिल अंतर्संबंध को दर्शाती है। जबकि पारंपरिक सामाजिक मानदंड और रीति–रिवाज प्रभाव डाल रहे हैं, सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक परिवर्तन ग्रामीण समुदायों की गतिशीलता को नया स्वरुप प्रदान कर रहे हैं। ग्रामीण भारत में समावेशी विकास एवं सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने के लिए इन गतिशीलता को समझना और संबोधित करना आवश्यक है।

सामाजिक व्यवस्था के रुप में भारतीय गाँव

भारतीय गाँव सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से बहुत ही रोचक होते हैं। ये गाँव भारतीय समाज के आधार को निर्मित करते हैं और उनकी विविधता और संस्कृति को प्रतिबिंबित करते हैं। भारतीय गाँवों में समाज और व्यवस्था के कई पहलू होते हैं, जो उन्हें अद्वितीय बनाते हैं।**[दासगुप्ता, बिप्लब1975],** गाँव के सामाजिक व्यवस्था में गाँववासियों के मध्य गहरा सम्बन्ध होता है। यहाँ लोग एक–दूसरे को जानते हैं, साथ ही साथ समाज में सामूहिक उत्सव, धार्मिक आयोजन और सामाजिक कार्यक्रमों को आयोजित करते हैं। इसके अलावा, गाँव में सामाजिक व्यवस्था आधारित होती है जिसमें गाँव के प्रमुख, ग्राम पंचायत और समुदाय के नेताओं का महत्वपूर्ण योगदान होता है। भारतीय गाँवों में परंपरागत संस्कृति का महत्व भी होता है। यहाँ पर लोग अपनी परंपराओं, रीति–रिवाजों और धार्मिक आदिष्ठित विश्वासों को मानते हैं। गाँवों में जैविक कृषि, खेती और पशुपालन का प्रमुख स्थान होता है, जो उनकी आर्थिक और सामाजिक गतिविधियों को प्रभावित करता है। हालांकि, कुछ चुनौतियों का सामना भी करना पड़ता है, जैसे कि गाँवों में शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएं, और आधारभूत संरचना (इन्फ्रास्ट्रक्चर) की कमी है। इन समस्याओं का समाधान करते हुए, सरकार व सामाजिक संगठन गाँवों के विकास के लिए कई योजनाएं व प्रारुपों का क्रियान्वयन करते चले आ रहे हैं। **[सिंह, सुनीता कुमार 2012],** भारतीय गाँव अपनी अनूठी पहचान, संस्कृति, और सामाजिक व्यवस्था के साथ अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं और उन्हें सही दिशा में विकसित करने की आवश्यकता है।

पंचायती राज व्यवस्था

पंचायती राज व्यवस्था भारतीय ग्रामीण सामाजिक व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण पहलू है। इसमें स्थानीय स्वशासन शामिल है, जहां ग्राम प्रमुख, जिन्हें सरपंच के रूप में जाना जाता है, सामुदायिक कल्याण, विकास परियोजनाओं और विवाद समाधान से संबंधित निर्णय लेते हैं। पंचायत प्रणाली ग्रामीणों को अपने स्थानीय शासन में अपनी बात रखने का अधिकार देती है और यह

सुनिश्चित करती है कि निर्णय समुदाय की जरूरतों व आकांक्षाओं के अनुरूप हों। यह एक जमीनी स्तर की लोकतांत्रिक संरचना का प्रतिनिधित्व करता है जो गांव की स्वायत्तता को बढ़ाता है।

बदलती ग्रामीण संरचना का एक विश्लेशण

भारत भौगोलिक, आर्थिक और सामाजिक उत्पत्ति के कारण विविध संस्कृतियों, भाषाओं और पृष्ठभूमि वाला एक विविध देश है। **[जोधका, सुरिंदर एस. 2012],** भारत के प्रत्येक गाँव के विकास की एक अनूठी कहानी है, और इसकी आत्मनिर्भर शैली आधुनिक युग से प्रभावित है और समय के साथ बदल रही है।

● भारतीय गाँव समय के साथ विकसित हुए हैं, कच्चे व मिट्टी से बने घरों की जगह पक्के व सीमेन्ट के घर बन गए हैं, संकरी गलियों की जगह चौड़ी सड़कें, नलों और निरंतर पानी की आपूर्ति की जगह हैंडपंप व कुओं ने ले ली है, और बैलगाड़ियों की जगह दोपहिया व चार पहिया वाहनों ने ले ली है। पश्चिमी पोशाक अधिक प्रचलित हो गई है, और सरकार ने स्वच्छ भारत मिशन जैसे स्थानीय स्वच्छता मुद्दों के समाधान के लिए गंभीर कदम उठाए हैं।

● ग्रामीण समुदाय पहले जमींदारों, उच्च जातियों और पंचायतों द्वारा शासित था, लेकिन उच्च जाति के शासन के उन्मूलन के बाद, समाज के उच्च वर्गों के पास बहुत कम शक्ति थी और वे शहरी जीवन शैली का पता लगाना चाहते थे। आधुनिक परिवहन और संचार की शुरूआत ने दूर–दराज के समाजों को वैश्वीकृत दुनिया से जोड़ा, उनकी मानसिकता बदली एवं बाहरी दुनिया के प्रति उनका संपर्क बढ़ा है।

● आधुनिक युग में, शहरी क्षेत्र के बढ़ते प्रभाव और बेहतर आय के लिए ग्रामीण क्षेत्रों से कारीगरों के प्रवास के कारण ग्रामीण आजीविका बदल रही है। हस्तनिर्मित उत्पादों की मांग कम हो गई है, और सस्ते विदेशी सामानों की आमद ने स्थानीय ग्रामीण कारीगरों की क्षमताओं को कम कर दिया है। विदेशी बाजार की इस प्रतिस्पर्धा ने अस्तित्व को कठिन बना दिया है और स्वदेशी उत्पादों का उपयोग कम हो गया है। इससे आत्मनिर्भर समाजों में व्यवधान उत्पन्न हुआ है।

● ग्राम समुदाय कभी आत्मनिर्भर थे, जीवित रहने के लिए पर्याप्त खाद्यान्न का उत्पादन करते थे। हालाँकि, आधुनिक युग के साथ, लोग आजीविका के लिए शहरों की ओर चले गए, जिससे गाँव की अर्थव्यवस्था में बदलाव आया। कृषि और स्थानीय हाथ से बने उत्पादों पर ध्यान कम कर दिया गया और औद्योगीकरण वित्तीय संरचना पर हावी हो गया। इससे गांवों में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन आया, पुरुष काम के लिए बाहर चले गए, लिंग विविधता में कमी आई और गांव की अर्थव्यवस्था में एक बड़ा बदलाव आया।

● आधुनिक युग में तेजी से शहरी विस्तार हो रहा है, जिससे किसानों को उन्नत बुनियादी ढांचे के लिए कम कीमत पर अपनी जमीन बेचने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। गाँव की सीमाएँ सिकुड़ रही हैं और शहर उनकी जगह ले रहे हैं, जिससे ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों की ओर प्रवासन बढ़ रहा है और रोजगार के अधिक अवसर उत्पन्न हो रहे हैं।

आजादी के बाद से भारतीय गांवों की संरचना में काफी विकास हुआ है, लेकिन देश के विकास के लिए इसका और अधिक विकास महत्वपूर्ण है। गाँव देश का अभिन्न अंग हैं और उनकी

संरचना देश के विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

भारतीय गाँवों में सामाजिक संरचना एक बहुरंगी एवं व्यापक विषय है जो विभिन्न कारकों के संयोजन से प्रभावित होती है। इसका मुख्य उद्देश्य सामाजिक समृद्धि, समानता और सुदृढ़ता को सुनिश्चित करना है। गाँवों में परंपरागत संरचना के कुछ पहलू अभी भी अत्यंत प्रभावशाली हैं, लेकिन यह कई बार समाजिक न्याय व समानता को बाधित करता है। जाति–लिंग के आधार पर भेदभाव एक सामाजिक समस्या रहती है। सामाजिक समृद्धि एवं समानता के लिए गाँवों में बदलाव की जरूरत है। शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, व आर्थिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देने के लिए समुदायों को सशक्त बनाना आवश्यक है। गावों में सामाजिक संगठनों की महत्वपूर्ण भूमिका है जो समाज के विभिन्न पहलुओं को संबोधित करते हैं और समस्याओं का समाधान करने में मदद करते हैं। सामाजिक सुरक्षा व अधिकार गाँव में रहने वाले लोगों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। यह सुनिष्चित करता है कि प्रत्येक व्यक्ति को उसके अधिकारों का उपयोग करने का समान अवसर मिलता है और किसी भी प्रकार की भेदभाव या उत्पीड़न से बचाव होता है। इन निष्कर्षों के माध्यम से हम देखते हैं कि भारतीय गाँवों में सामाजिक संरचना में सुधार करने के लिए सामूहिक और संगठनात्मक प्रयासों की आवश्यकता है, जिससे समृद्धि, समानता, व सामाजिक न्याय को प्रोत्साहित किया जा सके।

सन्दर्भ

1. यादव, अखिलेश चन्द्र (2010),'बदलते गाँव उभरता देश' कुरूक्षेत्र, जनवरी।
2. डॉ. नीलम सौन (2022), रुरल सोशल स्टक्चर एण्ड चेंजिंग पैटर्न इन रुरल इण्डिया, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ नॉवेल रिसर्च एंड डेवलपमेंट, खंड 7, अंक 10 अक्टूबर 2022
3. डॉ. रविंदर सिंह (2023), रुरल सोसाइटी एण्ड डेवलपमेन्ट इन इन्डियाः थ्रू ए सोसियोलाजिकल लेंस, IJCIRAS, जनवरी 2023, वॉल्यूम. 5 अंक. 8
4. चौधरी, सी0एम0. (2005),'भारत में ग्रामीण विकास' शिवम् वुक हाउस, प्राइवेट लिमिटेड, जयपुर।
5. दासगुप्ता, बिप्लब (1975), 'ए टाइपोलॉजी ऑफ विलेज सोशियो–इकोनॉमिक सिस्टम्सरू फ्रॉम इंडियन विलेज स्टडीज,' इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, वॉल्यूम 10, नं. 33–35, पृ0 **1395–41**
6. सिंह, सुनीता कुमार (2012),'खुशहाल होगी ग्रामीण जनता' कुरूक्षेत्र।
7. गुप्ता, दिपांकर (2012), व्हेयर द इंडियन विलेज: कल्चर एंड एग्रीकल्चर इन रूरल इंडिया, आईएन: विलेज सोसाइटी, एस.एस. जोधका द्वारा संपादित, ओरिएंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली
8. जोधका, सुरिंदर एस. (सं.) (2012), विलेज सोसाइटी, ओरिएंट ब्लैकस्वान, हैदराबाद, इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, मुंबई
9. हजारी एन. (1979), वोटिंग बिहेवियर एण्ड लेवल आफ पालिटिक्स इन अ डेवलपिंग रुरल सोसाईटी, पी.एच.डी डिर्सटेषन, बेहरामपुर यूनिवर्सिटी ओडिशा

10. श्रीनिवास, एम.एन. (1987), "द इंडियन विलेज: मिथ एंड रियलिटी," द डोमिनेंट कास्ट एंड अदर एसेज में, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, पृ0. **20–59**
11. दुबे, एस.सी. (1955) इंडियन विलेज, रूटलेज और केगन पॉल, लंदन
12. देसाई, ए आर (1969) रूरल सोशियोलॉजी इन इंडिया, पॉपुलर प्रकाशन, बॉम्बे
13. डॉ. मुमताज बानो (2004), सोशल स्ट्रक्चर एंड चेंज जर्नल ऑफ एडवांस रिसर्च इन साइंस एंड सोशल साइंस (जेएआरएसएससी) खंड 03,अंक 01